मधुबन 18/3/1963, सोमवार प्रातः क्लास

गीतः–जाने न नज़र, पहचाने जिगर .....

ओम् शांति। यह सपना नहीं, जिसको सिर्फ ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ ही समझती हैं। कहने में भले तुम ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार कहलाते हो; परंतु लिखा–पढ़ी में या जहाँ भी हो सके, वहाँ कहना और लिखना ब्रह्मामुखवंशावली ठीक (है) ; क्योंकि यह नॉलेज नई और बहुत पेचीदी है ।.....जब यहाँ किसको कहा जाता है कि यहाँ मम्मा रहती है, यहाँ बाबा रहते हैं, तो जो नया मनुष्य होगा वो समझेंगे कि शायद ब्रह्मा और सरस्वती कोई युगल हैं। ऐसे कभी नहीं कोई समझ सकेंगे कि ब्रह्मा की मुखवंशावली (है) ; क्योंकि सिर्फ ऐसे भी नहीं कहना चाहिए कि ब्रह्मावंशी। वंशी तो बाप के बच्चे सभी हैं; परंतु मुखवंशावली अक्षर कहाँ भी लिखने और डालने से फिर वो ऐसे नहीं समझें कि यह ब्रह्मा की कोई कुखवंशावली बच्ची है; क्योंकि हर एक अक्षर का अर्थ बड़ा अच्छी तरह से समझाना पड़ता है। ब्रह्मा के ऊपर ही सारा मदार बहुत है। यह तो ठीक है।....यह तो जानते हो कि बरोबर ब्रह्मामुखवंशावली तो सारी दुनिया है ; क्योंकि जबकि ब्रह्मा को प्रजापिता कहा जाता है। पहले तो इन लोगों ने वहाँ लिख दिया है कि कृष्ण को इतनी–2 रानियाँ थीं, इतने बच्चे थे; क्योंकि शास्त्रों में बहुत रोला पड़ा है। कोई सेंसिबुल सुने तो वो रोला चल भी नहीं सकता है। प्रजापिता मशहूर है बहुत। कृष्ण को कभी कोई प्रजापिता नहीं कहेंगे, जो उनको बैठ करके इतने बच्चे हुए। वो सभी कहाँ से आए ? यानी वो तो बिल्कुल ही रांग है; क्योंकि इन शास्त्रों में रोला बहुत है। थोड़ा कम रोला नहीं है। वास्तव में वो लोग नहीं समझते हैं कि हम शास्त्र में कोई गंदगी लिखते हैं या ग्लानि करते हैं; क्योंकि गाते तो हैं ना ''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत....,'' यह अक्षर कहना तो ठीक है; पर ग्लानि कहा किसको जाता है, वो तो बिचारे समझते नहीं हैं। किसमें है ग्लानि? ज़रूर कहाँ कोई लिखत में है। मनुष्य की एक/दो में जो वाणी चलती है, वो तो सिर्फ कोई बात करने की रही ; पर ये ग्लानि कहाँ लिखी हुई है? तो बाप आकर समझाते हैं कि ये शास्त्रों में लिखी हुई है। ईश्वर सर्वव्यापी है– यह शास्त्रों में लिखी हुई है।..... क्योंकि मनुष्य कहते हैं, ऐसे नहीं कहेंगे; क्योंकि भारत का सारा मदार इन शास्त्रों पर हो गया है। तो शास्त्रों में ही ग्लानि लिखी हुई है। उसमें भी समझाया जाता है कि हम ब्रह्माकुमारियाँ हैं, तो इतनी जो हैं सो तो ज़रूर एडॉप्टेड हुई होंगी। ऐसे तो नहीं कि ब्रह्मा को कोई इतने बच्चे हो सकते हैं। गाया जाता है– प्रजापिता ब्रह्मा। अच्छा, प्रजा कैसे? ज़रूर ब्रह्मा और फिर ज़रूर माता चाहिए; परंतु माता अगर होवे तो भी इतने बच्चे तो नहीं पैदा कर सके। प्रजा सारी कितनी! तो उनको समझाना पड़ता है कि असुल वास्तव में तुम भी प्रजापिता की संतान हो; क्योंकि परमपिता परमात्मा ने जब नई सृष्टि रची है ... ब्रह्मा द्वारा ही रची है; क्योंकि साकार सृष्टि हुई न। वो निराकार तो है ही आत्माओं का बाप ; परंतु साकार सृष्टि जब रची जाती है तो गाया जाता है कि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा (स्थापना करते हैं) ; क्योंकि प्रजापिता सिर्फ उनका नाम है। प्रजापिता विष्णु को नहीं कहेंगे, प्रजापिता शंकर को नहीं कहेंगे; क्योंकि ये सभी बच्चे हैं जो ज्ञान में होते हैं और जिनको सर्विस करनी होती है। ये हैं विचार–सागर–मंथन की बातें। अरे भाई, बाप को याद करो और अपने पद को याद करो, मनमनाभव, मद्याजीभव–वो तो बिल्कुल थोड़ा है। वो तो है पिछाड़ी की और पहले की और पिछाड़ी की बात; पर ये है डिटेल समझाना किसको। प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर मुखवंशावली ही हो सकती हैं। फिर वहाँ स्त्री का प्रश्न नहीं उठता है। पीछे होते ही हैं ; क्योंकि माता तो वहाँ है नहीं वास्तव में ; क्योंकि माता तो कहा जाता है ''त्वमेव माताश्च पिता''। वो तो एक को कहा जाता है; क्योंकि यह गांठ है बड़ी भारी कि तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। अभी यहाँ अगर सरस्वती बैठी हैं और बाबा भी यहाँ बैठे हैं ,तो अगर कोई कहे–''तुम मात–पिता, हम बालक तेरे,'' वो हम किसकी महिमा करते हैं? इनकी और इनकी फिर महिमा नहीं हो सकती। समझा ना! देखो, रोला हो गया न। इनकी और इनकी महिमा है ही नहीं। हम कहते ही हैं उनको–''तुम मात–पिता, हम बालक तेरे'' यानी परमात्मा की महिमा करते हैं। अगर उनके हिसाब से लेवें तो वो पिता है, तो ये माता हो जाती है; परन्तु नहीं। फिर यहाँ दुनिया में भी जगदम्बा का मशहूर है। जगदम्बा फिर अलग हो जाती है। इस माता को जगदम्बा फिर नहीं कहा

जा सकता है। बहुत रोला है समझने का। यह जब तलक पूरा कोई न समझा हुआ हो, समझाना बड़ा मुश्किल है। तो यह जो भी समझानी है गुह्य (है)। जैसे बाबा (ने) कल–परसों भी बड़ी अच्छी प्वाइंट निकाली थी कि कलहयुग में जो लौकिक पितायें होते हैं, वो बच्चे तो खुशी से बाप से लेते हैं कि मुझे बच्चा हो तो हमारे वारिस बनें। तो बरोबर बच्चा क्रियेट करता है। यह तो ज़रूर है कि बाप क्रियेट करते हैं बच्चों को सुख देने के लिए। अभी बाबा बेहद का क्रियेट करते हैं बच्चों को सुख देने के लिए। ये हैं मुखवंशावली। .....यह एकदम बड़ी गुह्य प्वाइंट थी ; परंतु ऐसे नहीं है कि सबकी बुद्धि में बैठ सकती है, कोई समझाय सकते हैं। नहीं। वो ठीक है–मनमनाभव, मद्याजीभव, शिव को याद करो और वर्से को याद करो ; परंतु ये डिटेल में समझाना, इनमें बड़ी बुद्धि चाहिए, बड़ी सेंस चाहिए। सो तो फिर बुद्धि भी अच्छी क्लीयर चाहिए । शेर का वो चाहिए। वो चरिये–खरिये नहीं धारण कर सकते हैं। तो बाबा ने समझाया था बहुत अच्छी तरह से कि बाप, बच्चे तो बड़े खुशी से माँगते हैं। वो देवताओं के पास जाएगा, फलाने के पास जाएगा, देवियों के पास जाएगी, माई जाएगी, ...– कुल का नाम निकालने वाला हमको एक बच्चा चाहिए। वंशावली यों कट न हो जावे। जिनको वंशावलियाँ (नहीं) रहती हैं (वो) पिछाड़ी (में) बहुत मत्था मारते हैं; परंतु वो तो बिचारे कहते हैं–हम बच्चे को सुख देंगे; पर बच्चा जन्म लेते भी कभी–2 बीमार होता है। कभी–2 वो अंधा भी जन्म ले लेता है। कभी आगे चल करके दुःख भोगते तो फिर क्या कहा जाता है? ये पास्ट के कर्म इनको हाडा देता है। अब इसमें बाप का तो दोष नहीं हुआ। वो तो बिचारा कहता है–मैं सुख के लिए इनको ; परंतु वो जो पास्ट में कर्म करके आए वो उनको बहुत आडो पड़ते हैं। समझा ना! क्योंकि उल्टे कर्म करते आए हैं। अभी इस समय में बाबा ने समझाया कि बाबा बच्चों को सुख के लिए एडॉप्ट करते हैं और उनको बैठ करके सुख के कर्म सिखलाते हैं। .....अभी हमारा(हमें) आइंदा के लिए बाबा सावधान करते हैं ; क्योंकि ये बातें कोई गीता या भागवत में लिखी हुई नहीं हैं। वहाँ तो कुछ भी नहीं है। गीता और भागवत में कुछ गोया है ही नहीं। वो तो जैसे दन्त कथायें हैं। बाप कहते हैं– मैं तुम बच्चों को एडॉप्ट करता हूँ। देखो, डायरैक्ट कहते हैं ना। किसको कहते हैं? अपने जीवात्मा कहो, आत्मा कहो (उससे कहते हैं)। आत्मा तो सुनेगी ऑरगन्स से। .....कहते भी हैं ना वो आत्मा वा जीवात्मा ऐसा कर्म करके आई है जो फिर अभी उनको भोगना पड़ता है। फिर भी आत्मा को शरीर तो लेना ही है ; परंतु आत्मा को बैठ करके सिखलाते हैं कि हे बच्चे! अभी तुमको ऐसे कर्म सिखलाता हूँ। एक तो समझाय देते हैं वो माया नहीं होती है; परंतु फिर भी यथा राजा–रानी तथा प्रजा। ये भी तो ज़रूर कोई पुरुषार्थ से नम्बरवार बनते होंगे, जो हम यहाँ कहते हैं कि हम ऐसे अभी कर्म सीखें जो भविष्य में हम ऐसे बनें। दासी न बनें। हम राजा बनें, हम साहुकार बनें, यह बनें। अभी मार्जिन है ना। ये सब बातें पीछे भूल जाएँगी। तो इस समय में हम बाप द्वारा पुरुषार्थ कर रहे हैं कि हम ऐसे कर्म करें। भले वहाँ दुःख नहीं होगा; परंतु मर्तबे तो फिर भी हैं ना। वो तो है ही सुखधाम। इसमें कोई शक नहीं है। अच्छा, यह दुःखधाम है, फिर भी मर्तबे तो हैं ना! सन्यासी हैं, बड़े साहुकार हैं, दुःखी हैं। तो वहाँ मर्तबे ज़रूर रहते हैं, दुःख नहीं रहता है। सुख तो सबको ही मिलता है। उस मर्तबे (को)पाने के लिए तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराया जाता है। बाप बैठकर पुरुषार्थ कराते हैं। बच्चों को ऐसे कर्म सिखलाता हूँ, जो ऐसा कोई बच्चा न होगा (जो) वहाँ जाकर बाप देखेगा तो (कहेगा) हमारा बच्चा पास्ट (में ऐसे) कर्म करके आए, जो दुःखी होते हैं, जैसे अभी होते हैं। फर्क है न । यह प्वाइंट वेरी गुड है; परंतु यह बुद्धि में धारण करना, किसको ऐसे प्रकार से समझना(समझाना) यह फिर महारथियों का काम (है)। घोड़ेसवारों का भी काम नहीं।..... लिखा तो हुआ है ना–आज तुमको बहुत गुह्य प्वाइंट सुनाता हूँ, बातें सुनाता हूँ–तो ज़रूर कोई गुह्य बातें सुनाते होंगे। जितना जो भी सर्विस में होगा उनको गुह्य बातें अच्छी तरह से घुचेंगी। उनके ऊपर वो विचार चलायेगा। यह बात है तो बहुत ठीक। समझाने की बड़ी मीठी बात है। किसको यह एक ही बात समझाने से उनका कपाट खुल जाएगा; क्योंकि (बात ही) ऐसी है न। अभी यह बात कौन समझेगा कि ऐसी–2 बात है? जो बिल्कुल उच्च कोटि के होंगे, ज्ञानी तू आत्मा महारथी (होंगे वही समझेंगे)। बाकी सेकेंड और थर्ड ग्रेड्स

की बुद्धि में यह नहीं बैठ सकेगी, जो धारणा कर लेवें; क्योंकि धारणा करनी होती है ऐसी–2 कोई प्वाइंट, जो हमको(हमारे) समझाने से वो समझे कि इनका ज्ञान जो देते हैं, यह बिल्कुल राइट है।.....राइट तो बहुत समझेंगे; परंतु उनके ऊपर आय करके वो (वर्सा) लेवें, वो उनकी तकदीर में जो होगा (वही लेंगे) और फिर हम समझ सकते हैं कि जो–2 भी कल्प पहले वाले अपने सिकीलधे अच्छे होंगे, वो तो फिर उठाय ही लेंगे।.....धारण करनी है, फट से धारण करानी है; क्योंकि धन दिये धन ना खुटे। बाबा धन देते ही हैं। यह हमारी नॉलेज ही ऐसी है। ऐसे नहीं है कि कोई परम्परा (है कि) यह नॉलेज चलनी है या इतने समय कोई धारण करके जानी है। नहीं, वो तो समझा जाता है कि यह नॉलेज बस अभी मिली। जब वहाँ वापस जाएँगे तब यह नॉलेज खलास हो जाएगी; क्योंकि ड्रामा का यह मरजीवे जन्म का जो भी अपना पिछाड़ी का पार्ट है,यह पूरा हुआ। पीछे है प्रालब्ध का पार्ट। फिर बुद्धि में ये ज्ञान का जो (संस्कार) है, वो सारा निकल जाता है, ऐसे मत समझना। आत्मा ज्ञान के संस्कार ले जाती है; क्योंकि ये पढ़ाई में तो ऐसा होता है ना। अभी आत्मा कुछ भी पढ़ती है, संस्कार ले जाती है, उस अनुसार उनको जन्म मिलता है। यह संस्कार हम लेते ही हैं राजाई के। वहाँ हमारे पास बिल्कुल ही ज्ञान नहीं होगा ; क्योंकि वहाँ फिर ज्ञान की गति नहीं। वो ज्ञान का पार्ट पूरा हुआ, प्रालब्ध मिल गई। फिर हम जैसे कि जाकर अपनी राजाई में होंगे .....। बस, फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। ऐसे नहीं कि परम्परा (से) चलने वाला है। मनुष्यों ने लिख दिया है यह सभी परम्परा।..... वो समझते हैं कि ये सभी शास्त्र सतयुग–त्रेता, द्वापर–कलहयुग में सुनते होंगे। ये लोग ऐसे समझते हैं; परंतु इन बिचारों का तो कोई दोष है नहीं; क्योंकि ड्रामा बना हुआ है, जिसको अपन जान लिया है। तुम जाते हो, तो वहाँ ही देखो, शिव की बैठकर पूजा करेंगे, वो ही कहेंगे–यह कल्पना है, यह फलाना है। यानी कोई अर्थ सिद्ध नहीं होता है। तो हम ही (समझते) हैं कि देखो, कितने मूर्ख हैं! ऐसे हम भी तो मूर्ख थे ना। जब हम पूजा वगैरह करते थे तो हमको कुछ पता थोड़े ही पड़ता है (कि) हम क्या करते हैं। शिव की पूजा करते थे.....करते तो सभी हैं ना। सन्यासी भी करते हैं ना। नहीं तो भला ..शिव का चित्र रखने की दरकार ही क्या पड़ी है? यह भक्तिमार्ग है। कैसे न कैसे, कुछ न कुछ पूजा करनी है। वो जो कह दिया है ....ईश्वर तो सर्वव्यापी है। अरे! भला सर्वव्यापी, सर्वव्यापी की पूजा तो नहीं करेंगे। यह भी तो ..नहीं हो सकता है। इन सबका दोष तो है नहीं। यह अभी बच्चे, जो शूरुड़ हैं बहुत अच्छे–मीठे, वो जानते हैं– बरोबर ये जो महारथी आगे हुए थे, जो राजा बनेंगे, वो इतना ही ज्ञान लेंगे, इतनी ही सर्विस करेंगे, वो कर रहे हैं। फिर तुम बच्चे ये भी जानते हो कि बरोबर जो ऊँच ते ऊँच है। कोई जानते तो नहीं (हैं)। मम्मा–बाबा को तो भला जानते हो ना। तुम समझ सकते हो कहाँ, कौन अच्छी सर्विस में लगा हुआ है और उनकी बुद्धि में अच्छी प्वाइंट्स हैं और अच्छे बड़े–2 दुकान सम्भाल रहे हैं। बड़े–2 जो पुराने हैं, दुकान सम्भालते थे.... नए को दुकान में भेजो तो दुकान जमाने में कितनी देरी लगती है। वो तो ज़रूर लगेगी ना। उनमें भी फिर जब कोई अच्छा होवे तो दुकान को जल्दी से उठाय सकते हैं। यह धंधा है ना। यह एक बिजनेस है। व्यापार है।.....रत्नागर यानी रत्न का व्यापार करने वाला। अभी वो तो रत्न नहीं हैं न। ये हैं ज्ञान रत्न। यह ज्ञान का सागर। .... ये रत्न उनके पास हैं और एम–ऑबजेक्ट भी समझाई जाती है कि इनसे जो ज्ञान के रत्न मिलते हैं, वो ही हमको भविष्य के लिए मालामाल करते हैं ; क्योंकि हमको मिलता ही हैं स्वर्ग में राजाओं का राजा बनना यानी साहुकार बनना। समझा ना! यह तो जानते हो अभी यहाँ कोई साहुकारों की तो बात नहीं है। यह तो है ही भविष्य में। ज्ञान से हम इतना बनते हैं। अब यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ज्ञान से सद्गति होती है और सबकी होनी है। सद्गति कहा ही जाता है सतयुग को। कलियुग कहा ही जाता है दुर्गति। अभी कलहयुग से सद्गति, सच गद्दी स्थापन करने वाला, स्वर्ग स्थापन करने वाला सिवाय परमपिता परमात्मा (के) कभी (कोई) हो ही नहीं सकता है। तुम बच्चों को बाबा ने बार–2 कहा है–यह गाँधी का नाम सदैव लेते रहो; क्योंकि गाँधी की बड़ी महिमा है। वो गाँधी जो कह दिया है ना पतित–पावन, तो गोया अपन को भी पतित कह दिया है। वो समझा है कि पतितों को पावन करने वाला सिर्फ एक है ; परंतु वो है भी

गीता। देखो, फर्क कितना हो रहा है; क्योंकि मनुष्यों को तो पता नहीं। हम तो जानते हैं ना। अभी तो आजकल हम सब रिकार्ड में भी भरते हैं। उसमें तो और ही खबरदारी करनी पड़ती है। गाँधी का भी नाम बहुत बाला है और गीता हाथ में है। गीता किसके हाथ में है? उन्हीं के हाथ में है, जिनको ही कहा जाता है कौरवपति। अभी उसमें तो ऐसी कुछ भी बात लिखी हुई ही नहीं है ना। अभी वो उठाते, कहते भी हैं पतित–पावन सीता–राम। सीता–राम फिर रघुपति राघव राजाराम के तरफ क्यों गया, जबकि वह कृष्ण है गीता का भगवान? तो भला उसका नाम फिर क्यों लिया? उसका मतलब ही असल है, राइटियस अक्षर है–सभी सीताओं का पतित सभी पतित क्वेश्चन उठता है ना। तो ज़रूर भगवान ही होगा और तो कोई दूसरा हो ही नहीं सकता है। अभी कितना उड है समझाने की बात, जो बाबा बैठ करके समझाते हैं। हाथ में गीता, नाम भी लेते हैं पतित–पावन, है भी बरोबर गीता का भगवान पतित–पावन; परंतु ..कृष्ण नहीं है, परमपिता परमात्मा शिव है। कितना गाँठी पड़ गई है। इसको कहा जाता है गाँठी। कोई दूसरा नहीं (जो) उस गाँठी को समझाय सके और बाप बैठ करके समझाते हैं। उन लोगों को यह भी तो समझाना पड़े ना कि पतित को पावन करने वाला तो वो ही है। कोई भी पतित को हम महात्मा कह ही नहीं सकते हैं। तो जब ..है ही पतित दुनिया, अभी महात्माएँ आए कहाँ से? महात्माएँ, उनको तो गुरु कहा जाता है। भला वो गुरु आये कहाँ से, जो पावन करे, जबकि हम कहे जाते हैं पतित? तो सब गुरु भी पतित हो गए। ये बातें बैठ करके युक्ति से समझाना भी। जब कोई बड़ी सभा लगती है उनमें ये गुह्य प्वाइंट्स बैठ करके समझाने से जो बुद्धिवान होगा (वो समझेगा)। आते गरीब लोग हैं। अगर कोई बड़े आदमी आते भी हैं, तो उनको तुम लोग जा करके मत्था मारते हो कि आओ; इसलिए वो मान देने के लिए आते हैं, कोई बड़े आदमी समझने के लिए नहीं आते हैं। उनको तो कुर्सी पर मँगाओ, तो झट आयेगा सभा में; क्योंकि उनका बहुत मान होता है।.....चाहे भले तुम लोग चीफ जज को बुलाओ या राधाकृष्णन भी तुम्हारे पास आ जावें। वो बड़ाई के लिए आयेंगे .....। बाकी कोई ऐसे मत समझो, समझने के लिए आते हैं। कोई एक भी बड़ा आदमी समझने के लिए नहीं आता है। समझने वाले फिर भी हैं ही गरीब; क्योंकि बाबा है ही गरीब निवाज। .....बाबा ने कहा है ना–साहुकार सौ में एक, साधारण सौ में दस अच्छा। बाकी 90 परसेंट फिर नम्बरवार गरीब ही गरीब। ऐसे आने हैं ज़रूर। आते ही ऐसे हैं ; क्योंकि काम चलना तो है ना। तो ये ऐसे ही चलता रहेगा और धीरे–2 चलेगा झाड़; क्योंकि मंज़िल बड़ी (है ना)। भट्ठी में बैठना किसको, यह बड़ा मुश्किल है; क्योंकि एक लॉ है कि एक हफ्ता तो भट्ठी में ज़रूर पड़ना पड़े; क्योंकि यह कायदा है ना। शास्त्रों का भी कायदा है और बिठाते भी हैं सात रोज़। ....अभी किसको सात रोज़ हमारे पास बैठाओ तो कभी बैठेगा नहीं। अभी वो सात रोज़ भी चाहिए ब्राह्मण के संग में। फिर शूद्र का मुँह भी नहीं देखना चाहिए ; क्योंकि उसका रंग लग जाता है। उनके वायब्रेशन ही खराब कर देते (हैं)। यह नॉलेज बड़ी गुह्य है। अरे! यह सृष्टि का मालिक बनाने के लिए भगवान आ करके पढ़ाते हैं। कोई मासी का घर थोड़े ही है। और है फिर देखो गरीबन के लिए। तुम नम्बरवार कितनी (देखी हुई) हो। उसमें भी नम्बरवन तुम देख लो, तुम्हारी मम्मा गरीब। भले यह तो चलो, निमित्त बना हुआ है। अभी देखो, है यह सबसे गरीब। गरीब भी है, साधारण भी है। साहूकार तो कोई है नहीं। सबसे गरीब...पहले माता, पीछे पिता। पहले जगदम्बा, पीछे जगतपिता। ...त्वमेव माता अक्षर उनका है ; परंतु मनुष्य को मर्तबा चाहिए ना। तो बाबा ने अपना वो मर्तबा फिर भी माता को दिलाया है। ....गाया मेरे लिए जाता है; परंतु यहाँ मनुष्य का मर्तबा होना चाहिए ना। आगे गीत गाते थे– 'मनुष्य का क्या मर्तबा, क्या कोई नहीं है जानता' ; क्योंकि इस समय में भारत कुछ है नहीं। एक तरफ तो कह देते हैं–. ''सबसे अच्छा है भारत देश हमारा, हिंदुस्तान हमारा'' अभी इन बिचारों को तो यह मालूम नहीं है कि हिन्दुस्तान बहुत अच्छा था। अभी तो कोई काम का नहीं है। अभी तो बर्थ नॉट ए पेनी है। ऐसे तो नहीं कहते हैं– था। अभी कहते हैं– हमारा देश सबसे अच्छा है यानी अच्छा था। यह सब लोग जानते हैं कि भारत प्राचीन में बड़ा फर्स्ट क्लास था एकदम। वहाँ किंग, गॉड एण्ड गॉडेज राज्य करते थे, जिनका चित्र दिखलाते हैं। इनको ही तो कहते हैं न लक्ष्मी–नारायण की है

प्रिंसिपल चित्र; क्योंकि कृष्ण को तो गालियाँ दे करके, द्वापर में ले करके खलास कर दिया है ; इसलिए यह बाबा ऐंकशियस(उत्सुक) रहता है कि ल.ना. का चित्र मिले। तुम देखेंगे आज(कल) ल.ना. के मंदिर भी बड़े–2 बनाते हैं। बड़े–2 आदमी भी ल.ना. के मंदिर पर पैसा खर्च करते हैं। तो जैसा–जैसा वायुमंडल देखते हैं, ऐसे हम चित्र बाँटते हैं। तो हम समझावें (बाबा ने बताया है)– हम तुमको राजाओं का राजा बनायेंगे। नर से नारायण बनना है; क्योंकि है ही सत–सत नर को नारायण बनाने की कथा (अथवा) नॉलेज। किंगडम जब स्थापन होती है तो ज़रूर किंग एण्ड क्वीन का नाम तो बाला है ही बरोबर और चित्र भी बड़े अच्छे दिखलाते हैं। भले उनमें बुद्धि कुछ भी नहीं है। साँवरा नारायण को बना देते हैं, तो गोरी लक्ष्मी को (बना) देते (हैं)। यहाँ देखो, नारायण को चार भुजायें हैं, तो उनको दो भुजायें हैं। कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। ऐसे बुद्धूओं को समझाना तो पड़ता है ना। नहीं तो चित्र बिगर.....बिल्कुल अंजान बच्चे हैं। यह बच्चे ऐसे हैं जैसे बाबा कहते हैं कि हम जब गए थे चक्राता में तो वहाँ खेती करने वाले पहाड़ी लोग थे, उनको कोई पढ़ाता था तो पढ़ते ही नहीं थे। बोलते थे– नहीं, हमको यह धंधा अच्छा लगता है। तो इस समय में यह रिलीजियस तो हैं नहीं, अधर्मी तो हैं ही। वो कहते हैं– हम रिलीजन नहीं मानते हैं। अरे, क्यों कहते हैं रिलीजन नहीं मानते, जबकि इतनी प्राचीन देवी–देवताओं का धर्म? ; क्योंकि जानते नहीं हैं कि हमारा रिलीजन कौन सा है। अभी हिंदू रिलीजन नहीं है ना। तो हिंदुस्तान का हिंदू रिलीजन कहना, यह सुहाती नहीं है। तो यह ड्रामानुसार न मालूम होने के कारण बोलते हैं–हम रिलीजन को नहीं मानते हैं; क्योंकि हम अपने रिलीजन को जानते ही नहीं हैं, तो फिर मान के क्या करें? ऑटोमैटिकली ऐसे निकल पड़ा है और बरोबर कोई भी नहीं जानते हैं। सब समझते हैं कि हिंदू धर्म, आदि सनातन। .....अभी देवी–देवता धर्म कहें, तो पुरानी बात भी याद आवे। बहुत अच्छा था। अभी हिंदुस्तान को कोई अच्छा थोड़े ही कहेंगे। यह भी एक घमंड है। इसको भी कहा जाता है जैसे देहअभिमान। भारत के नाम में बस यह सबसे अच्छा है बहुत। नहीं तो वास्तव में इस समय बिल्कुल ही सबसे कंगाल है। हर बात में सब कंगाल ही हैं। रोगी, कंगाल, 100% हर एक बात में; क्योंकि इनकी महिमा 100% ऊँची, तो फिर इसकी ही महिमा 100% नीची। अब जब 100% नीची है, तो ये बिचारे न जानने के कारण कह देते हैं हिंदुस्तान हमारा। एक तरफ यूँ गीत गायेंगे– हिंदुस्तान सबसे अच्छा हमारा, दूसरा वो गायेंगे– क्या हाल हुआ है भारत का।..... फलाना कहते हैं, यह कहते हैं कि यहाँ बहुत अच्छे रहते थे आगे। इनका कोई ठिकाना थोड़े ही है । ताकत तो कुछ है नहीं वास्तव में। ये तो सब बात का लोन लेते हैं। कोई वक्त में तकलीफ होगी तो वहाँ से लश्कर भी मँगाते हैं। एरोप्लेन में मिलिट्री भी मँगाय लेंगे ; क्योंकि तरस पड़ता है सबको भारत के ऊपर; क्योंकि वो जानते हैं कि भारत बहुत अच्छा था। अब यह कंगाल बना है। भारतवासी यह भी नहीं जानते हैं कि हम बहुत अच्छे थे। अब कंगाल बने हैं, बिल्कुल ही इनसालवेंट बने हैं।.....यह भारत वास्तव में इस समय में अनाथ आश्रम है ; क्योंकि जिस जगह में गरीब रहते हैं..उनको दान दिया जाता है। अनाथ माना ऑर्फन। अनाथ का असली अक्षर है ही अनाथ यानी ऑर्फन। नास्तिक समझो। यह तो हम जानते हैं, दुनिया में और कोई बच्चे नहीं जानते हैं। हमारे में भी जो भी सेंसीबुल हैं, सर्विसएबुल बच्चे हैं, जिनमें दिमाग में पुर है, वो समझते हैं, उनको खुशी रहती है, किसको समझाय भी ऐसे सकते हैं। बाकी बिचारों लल्लू–पंजू को तो कुछ पता भी नहीं है।.....बाप तो ऐसे ही कहेंगे ना। जैसे, तुम्हारी मम्मा–बाबा, जिसको ब्रह्मा,जगतपिता और जगतअम्बा कहती हो, वो पुरुषार्थ करके हमारे से वर्सा ले रही हैं ,तुम उनको फॉलो करो ना। यह जो कहा जाता है–फॉलो फादर एण्ड मदर, तो इसको कहा जाता है कि नहीं; क्योंकि मेरे को तो फॉलो नहीं करना है ना, मेरे से तो तुमको राजाई लेनी है। मेरे को फॉलो तो करना ही है। हमारे पास चले आयेंगे। बता देते हैं–मैं आया हूँ गाइड बन करके, सो तो तुमको हम सब प्योर करके, आग में भी जलाय कर करके, तुम्हारा शरीर खतम कराकर मैं तो ले जाऊँगा; परंतु भविष्य सृष्टि का मालिक बनने के लिए, स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए फॉलो मदर एण्ड फादर। जैसे वो पुरुषार्थ करते हैं, जैसे वो

धारण करते हैं वैसे तुम भी धारणा करके उन जैसा बनो। बाप तो ऐसे ही कहेंगे न बच्चों को। देखो, यह बाप कहते हैं, बेहद का बाप कहते हैं कि ऐसे बनो, योग रखो और मेरी मत पर चलो। वफादार बनो। फरमानबरदार बनो। अगर नहीं, तो फिर सजायें भी खायेंगे। देखो, कितना साफ, अच्छी तरह से बाबा बोल रहे हैं। डायरैक्ट जैसे लौकिक बाप समझाते हैं वैसे आज परलौकिक बाप बैठ करके पढ़ाते हैं। यह कोई की बुद्धि में थोड़े ही आता है।... अगर यह बुद्धि में कायदेसिर रहे कि बाप पढ़ाते हैं, तो खुशी का पारा सारा दिन रहे। अज्ञानकाल में सारा दिन रहता है। स्टूडेंट लाइफ में बच्चों को नशा रहता है हम यह पढ़ते हैं। .... फलाना मास्टर हमको पढ़ाते हैं। मास्टर को कौन नहीं याद करेंगे! परंतु यहाँ देखो, तीन हैं फुल पावर। वो ही बाबा, वो ही टीचर, वो ही सद्गुरू। उनको तो तिगुना याद करना चाहिए, बल्कि अब तीन सौ गुना जास्ती याद करना चाहिए; परंतु अहो माया! याद करने ही नहीं देती है, धारणा करने ही नहीं देती है, नहीं तो है भी बहुत सहज भट्ठी, समझाना। एक–2 प्वाइंट को अभी इतना अच्छी तरह से बैठ करके विचार करें और कोई को भी बैठ करके समझावें कि हम अनुभवी हैं, हमको बाप ऐसे कर्म सिखलाते हैं, जो भविष्य में हम ऐसे न कहेंगे–यह पास्ट का कर्म इनको आलो आते हैं, इसलिए ये दुःख पाते हैं। तो यह प्वाइंट बड़ी अच्छी थी एकदम; परंतु जो सेंसिबुल होगा, उनको अच्छी तरह बुद्धि में बैठेगी और वो पहले–2 समझाने लग पड़ेंगे ; क्योंकि जब बाबा बैठ करके नई बातें सुनाते हैं, तो बच्चों को नई बातें सुनानी पड़ती थीं, याद हो तो सुनावें ना। एक–2 बात, एक–2 गुह्य राज़....तो किसको उड़ाय सकती है यानी नये–2 भी जो ज्ञान लेने वाले हैं इनमें धारणा होनी चाहिए। अभी धारणा होवे ही जबकि बाबा से योग हो, बाबा में लव हो; क्योंकि बाबा में लव तो चाहिए ना। यह है प्राणों से प्यारा ; क्योंकि 21 जन्म जीव (के) प्राणों को जमघंटों के पकड़ने से फांसी से ही छुड़ाते हैं। वो बोलता है ना–आगे तो मैं काल भेज देता था। तुम्हारी इन आत्मा को ले करके और मेरे पास वो गर्भ जेल में, वहाँ ही फिर मैं उनको सज़ा देता था। अभी तो देखो, मैं इन कालों का काल हूँ। तुम्हारे पास सतयुग–त्रेता में यह काल का नाम नहीं होगा। यह नाम रख दिया है। बाकी आत्मा तो आपे ही शरीर छोड़ करके (दूसरा शरीर लेगी)। यह कोई काल की बात नहीं होती है। यह तो बैठ करके समझाया है। वो आत्मा तो आटोमैटिकली अपना शरीर छोड़ करके गर्भजेल में जाती है और उनका जो हिसाब–किताब है, वो बैठ करके (चुक्तू करती है)। वो जैसे कि धर्मराज उनको सज़ा देता है। अभी इसमें काल की कोई बात नहीं होती है। काल तो नाम रख दिया है कि काल आ करके इनकी आत्मा को ले जाते हैं। शास्त्रों में सावित्री और सत्यवान की (जो) बातें लिखी हैं, ऐसी बातें हैं नहीं। ये तो बैठ करके बहुत बातें बनायी हैं, नहीं तो आटोमैटिकली आत्मा कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ करके गर्भ में जाती है। वो गर्भ जेल है; क्योंकि गर्भजेल और गर्भमहल का भी दृष्टांत है कि एक बैठा हुआ था। बाहर ही नहीं आते थे। उनको आराम ही है। वहाँ उनको दुःख होता है, बोलता है–हमको बाहर निकालो। ये सभी बातें समझाई तो जाती हैं ना। हैं तो सही ना कुछ न कुछ शास्त्रों में; परंतु समझाय कौन सके–गर्भ जेल कब है, गर्भ महल कब है। दिखलाया है ज़रूर कि पत्ते पर (अंगूठा) चूसते आते हैं, तो रख दिया सागर का नाम और है गर्भ की बात। तो बाप बैठ करके ये सभी बातें समझाते हैं। यह बाबा ने बात समझाई है, यहाँ सब है ना, वो ही नई–2 बातें समझा रहे हैं ; परंतु धारण भी हों और इनमें मैनर्स भी बड़ी अच्छी सीखनी पड़ती है। वो स्कूल के मैनर्स अलग बात हैं और ये तो पवित्रता के मैनर्स हैं– सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी। एम–ऑब्जेक्ट ही है कि ऐसा बनना है। ऐसा बनना है तो सभी 5 विकारों से (मुक्त होना पड़े) ; क्योंकि बहुत मीठा बनना है। हूबहू जैसे बाबा मीठा है .....। तो बाबा जब भी अच्छे–2 बैठ करके सुनते हैं, दिल में खुशी बहुत होती है। वाह–3 ! प्वाइंट तो ऐसी है जो किसको भी समझावें तो समझेगी कि यह बरोबर है। बाबा ऐसा कर्म सिखलाते हैं। कर्म–अकर्म–विकर्म की गति तो है ही गीता और भागवत में; परंतु एक ही ठोकर दे दी है। कृष्ण भगवानुवाच कहकर सारी गीता खण्डन (कर दी है)। अभी अगर किसको कहो, बोलेगा– कृष्ण भी वही, तो शिव भी वही। बोलते–शंकर भी होते, सो भी वही। सर्वव्यापी (कह देते हैं) तो पीछे बात ही खतम हो जाती है। बच्ची मीठी है, तो भला

जा करके किसको सुनावें? सबसे अच्छा तो वानप्रस्थ वाले हैं, वो नहीं कहेंगे (कि) मुझे फुर्सत नहीं है। तो क्यों नहीं वानप्रस्थ अवस्था में, देखो, देहरादून में जो बाबा कहते थे– हैबनर्स में भी वानप्रस्थ आश्रम बहुत जगह हैं। ढूँढे कौन? डायरैक्शन्स तो मिलते हैं, ढूँढ़ते थोड़े ही हैं। सेंटर जमाने के पहले तो ग्राहक देखना चाहिए कि यहाँ ग्राहक ऐसे हैं, जिनको हम बैठ करके समझावें, फुर्सत है? बाकी तो धंधे में इतने चूर हैं। अजमेर में गये, वो चरिये–खरिये मामे लोग वो बिचारे रहनी–करनी। भले कोई साहूकार होते हैं (उनकी) रहनी–करनी ऐसी...गंदी है, वहीं हगेंगे, वहीं खायेंगे, वहीं किचन में आयेंगे। यहाँ है, यह भीड़ देखो। वो कोई स्नान थोड़े ही करते हैं। ऐसे बड़े–2 अच्छे–2 घर के मनुष्य बहुत हैं (जो) स्नान नहीं करते हैं। हग करके ऑफिस में आयेंगे, अन्दर तो जाएँगे ही। ऑफिस में आ करके बैठ जायेंगे, खायेंगे। घर में जायेंगे। कोई स्नान की बात थोड़े ही होती है। ढेर के ढेर (ऐसे होते हैं)। वहाँ स्कूल में बहुत ही जाते हैं। कोई स्नान–पानी थोड़े ही करते हैं और जाते हैं। यहाँ देखो, कितनी परहेज़ है। छोटे–2 बच्चों के ऊपर कितना ज़प्त है कि चले आये हो, यहाँ फिरो नहीं। भले अभी तलक कुछ ऐसे हैं, नहीं तो कायदा है कि वहाँ जावें, स्नान करके पीछे आवें। कहीं–2 जो वैष्णव होते हैं, वो करते हैं, तो भी वो जेनम डाल देते हैं। थोड़ा पानी डाल देते हैं। वो अपवित्र पवित्र (हो जावे)। वहाँ बाबा भी खुद करते..आते हैं, अपवित्र पवित्र (हो जावे इसलिए) वहाँ छिट्टा डाल देते हैं। थोड़ी स्नानी कर देते हैं। वो अभी कहाँ है ! बात मत पूछो। आजकल जो विलायत से हो करके आते हैं, वो तो बस, बात मत पूछो। देखो, अभी कितना फैशन निकला है। जो भी थोड़ा मॉरैलिटी(नैतिकता) में हो, फैशन, नाटक, वगैरह में जाने से ही उनमें इमॉरैलिटी(अनैतिकता) के संस्कार आ जायेंगे। बस, उनमें देखो सब खुश। दिल्ली में बहुत गाने–बजाने सुनते रहते हैं। दिल्ली में जाओ तो जो भी बड़े–2 एम.पी. (आदि) हैं ना सब(को) गाने का शौक, फैशन का शौक। बस, इसमें ही वो खुश (रहते हैं); क्योंकि समझते हैं कि अभी हम विलायत जैसे हो गये हैं। इसलिए समझते हैं कि वाह! अभी देखो, हमारा भारत तो जैसे परिस्तान बन गया है और इन बिचारों को तो मालूम नहीं है कि यह परिस्तान ही कब्रिस्तान होने वाला है। कितना अपने को खयाल रहेगा। यहाँ बैठे–2 खयाल आता है कि अभी बॉम्ब छूटेंगे। कितनी अच्छी है, कितनी फैशनेबुल है, कितनी धनवान है, कितने बड़े–2 महल में रहते हैं, आज हैं, कल होंगे नहीं। उस समय में इनका क्या हाल होगा; क्योंकि यह तो हम जानते हैं। दुनिया में तो कोई नहीं जानते हैं कि अभी बॉम्ब्स गिरेंगे; क्योंकि वो तो माया के अंध में हैं। समझते हैं वो भी अंध में हैं। तो कितनी–2 अच्छी है, आती है, कितनी नफ़ीस–नाजुक, और जायेंगे कैसे? भारत में ऐसे ही, जब होगा कुछ भी , ये देखो, बॉम्बे कैसी अच्छी बनी है। बाबा जब बॉम्बे में जाते हैं (तो विचार आता है) क्या मेरे होते यह बॉम्बे होगा नहीं ! बाबा ऐसे कहते–कब होंगी? परंतु होंगी भी, कुछ तो आगे होंगी ज़रूर। यह बॉम्बे, ऐसी फर्स्ट क्लास, क्या होगा उस समय में हाय! जबकि यह अर्थक्वेक्स होंगे, नैचुरल कैलेमिटीज होंगी या यह सागर ही थोड़ी–बहुत उथल खाएँगे ? ऐसे उथल खाते हैं। कहाँ सुनने में आता है। कहाँ–2 वो चढ़ जाते हैं, सो डूबाय देते हैं। उस समय में उनका क्या हाल होगा! हम तो अभी जानते हैं कि यह हाल होने वाला है। हम जानते हैं–जो अच्छे–2 बच्चे (हैं) वो जानते हैं कि जब जाना होगा, हमको पहले ही से आना होगा, जैसे कि हम अनकॉन्शियस(बेहोश) होते हैं और हम समझ जायेंगे कि शरीर छोड़ देते हैं। अच्छा, हमको तो बहुत फर्स्ट क्लास शरीर मिलने का है। देखो, ये ज्ञान की बातें हैं। सबकी यह बात नहीं है। सबको तो बीमारियाँ भी होंगी जो एकदम डर मरेंगे। बीमारी में भी जो पक्की अवस्था वाले होंगे (वो) जायेंगे (और कहेंगे) क्या हर्जा है? कमाई तो कर ही ली है। शरीर छोड़ेंगे (तो) हमको अच्छा शरीर ही मिलेगा। अगर जाना भी है, तो अच्छा ही करेगा ; क्योंकि हमने कमाई बहुत अच्छी की है, जो हम जा करके भोगेंगे। समझा ना! जा करके....ऊँचा पद लेंगे। हाँ, यह ज़रूर है, जो बिल्कुल अच्छे–2 हैं वो तो रहेंगे ही; परंतु यह तो खुशी रहती है ना कि अच्छा बैठेगा। वो आयेंगे भी ऐसे ही अनकॉन्शियसनेस के माफिक। अभी हम जाते हैं। चलो, छोड़ो शरीर को। ऐसे बहुत साधु–सन्यासी लोग होते हैं जो ऐसे ही बैठे–2 समझते हैं कि शरीर छोड़ने का है। फिर कभी का छूट जाता है, कभी का रह जाता है।

ऐसे बाबा बहुत पढ़ते हैं और सुनते हैं। यहाँ तो जो बच्चे अच्छे हैं वो जब बैठेंगे और इतना (याद में) होंगे, जिनका बुद्धि का योग ठीक लगा हो(गा) (उनका) खुशी का (पारा चढ़ जाएगा और कहेंगे कि) अभी यह शरीर छोड़ते हैं। अभी मेहनत की है। जाकर कोई राजा के पास ही (जन्म लेंगे)। देखो, जाते हैं ना फलाना। बाबा ने ही बताया–फलाना गया, तो जा करके जम्मू के राजा के पास जन्म लिया। ये तो अच्छा ही है ना। वहाँ जा करके भी तो हम कुछ काम करेंगे ना। भले हमारा ऑरगन छोटा होगा। तो भी हमारे गुण तो होंगे ना। गुणों की बहुत छोटेपन में (भी पहचान हो जाती है)। आगे हेमराज था चिदाकाशो का। वो छोटा था, खेल करता था। उनके ऊपर ऐसे फण करके सर्प आता था। ऐसे करता था। ऐसे–2 महिमा करते थे। यह तो हम अभी जानते हैं कि हम ऐसे जाते हैं, जो हमारा कहाँ भी....नहीं होगा। हमारी चलन उस समय में, उस घर में बड़ी फर्स्ट क्लास होगी; क्योंकि ज्ञान की (पराकाष्ठा होती है) और पवित्र बनने वाले, यह भी तो बुद्धि में रहता है ना। जिनमें ज्ञान की पराकाष्ठा है, कहाँ भी जायेंगे (तो उनको सुख देंगे)। तो हम जो इतना सतयुगी संस्कार ले जाते हैं, जिसके घर में जायेंगे उनको हम कितना सुख देते होंगे। कई बच्चे होते हैं, बड़ा सुख देते हैं। कई हैरान कर देते हैं। रो–रो करके एकदम रोगी (बन जाते हैं) और कोई तो बड़ा फूल के मुआफिक रहते हैं। हम तो जानते हैं ना कि कृष्ण की कितनी महिमा है, तो हमारी कितनी महिमा होगी जब हम कहाँ जन्म लेंगे। माँ को भी दर्द नहीं देंगे, आवाज़ नहीं करेंगे, रोयेंगे–पीटेंगे नहीं, रोगी नहीं बनेंगे। यह तो हम समझते हैं ना; परंतु यह भी कौन समझते होंगे? जो–2 अच्छी सर्विस में लगे हों। बाकी बुद्धू लोग थोड़े ही समझते होंगे। ये सभी बातें हैं सोचने की, समझने की, विचार–सागर–मंथन करने की। बाकी...जाकर भाषण करना है, यह भी सीखने का हुनर होता है। कर लेते हैं। अंदरूनी पक्की अवस्था चाहिए। आवाज़ करने वाला या भाषण करने वाला सिर्फ बाहर का बोलता नहीं चाहिए। ऐसे बाबा के पास बहुत हैं। भाषण बहुत अच्छा करती है। अन्दर कपड़ धूल भी नहीं है। ऐसे भी हैं। चलो बच्ची, टोली ले आओ। पहले मेल्स को देकर आओ।.....जो आई.सी.एस. पढ़ते हैं बड़े नसीब। तुम यहाँ जो 'पी सी पी टी सी कॉलेज' (है उसमें जाओ तो) देखो कितना नशा होगा उनको। वो जानते हैं कि हम जा करके सुपरिटेंडेंट बनेंगे। जैसे बादशाही है। आजकल पुलीस में नौकरी एक बादशाही है, सबसे जास्ती। चलो, पुलीस का कोई नाम न बदनाम करे। कोई भी बड़ा आदमी हो तो उनके ऊपर भी छांटा डाल देते हैं। मैंने अखबार में भी तो पढ़ा था। अलाहाबाद का जस्टिस मुल्ला, उसने कोई पुलिस वाले को देखा कि इसने तो बड़ा जुल्म किया है। तो उसने कुछ लिख दिया कि यह पुलिस तो जैसे कि..... यानी उनके ऊपर छांटा डाला था। तो जैसे कि सभी पुलिस के ऊपर आ गया (कि) पुलिस में बहुत लॉलेसनेस है। पुलिस में लॉलेसनेस है, तो सभी (के ऊपर) आ गया ना। तो बैठ करके उनका आवाज़ निकला कि यह तो एक के बदले में सारी पुलिस के ऊपर कलंक लगाय दिया। तो उसने स्पीच की और भी कुछ कहा था, कोई से तंग हुआ था। ऐसे पुलीस वाले बहुत तंग करते हैं। (किसी ने कहा– कहा था ये जैसे बदमाशों की टोली है) हाँ, ऐसे–2 अक्षर उसने कहा। तो सारे पुलिस का नाम ले लिया ना। पर्टीकुलर तो कुछ नहीं किया। फिर उनकी स्पीच निकली, ऐतराज उठाया, फिर बड़े जज ने जजमेंट में से वो अक्षर निकलवाय दिये। दादा, आज सोमवार है। शिवबाबा कहते हैं। सोमवार और बृहस्पतवार, हैं तो सभी दिन अपने लिए। बाबा यहाँ है तो पीछे क्या है! हमारा तो जैसे सभी शिव के ही दिन हैं। रोज़ पढ़ाते हैं न। फिर भी भोग लगाते हैं। ....कोई शिव का सोमवार के दिन करते हैं, कोई मंगल के दिन, कोई बुध, सबका कोई एक जैसा ठिकाना नहीं है। फिर भी बाबा कहते हैं– अच्छा, शिवबाबा, दादा और मीठी मम्मा का मीठे–2 सिकीलधे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यथा योग्य बच्चों को गुडमॉर्निंग।

✷✷✷✷✷✷✷✷